महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में मातृभाषा दिवस का आयोजन

भाषाओं की विविधता समृद्धि की द्योतक है - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा दि. 25 फरवरी 2015: भारत विविध भाषाओं का देश है, इसलिए भाषाओं की विविधता समृद्धि का द्योतक है। व्यक्ति की मातृबोली ही सामाजिक पहचान की प्रतीक है। उक्त प्रतिपादन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने किए।

वे विश्वविद्यालय में मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में 'वैश्विकरण और मातृभाषाओं के समक्ष चुनौतियां' विषय पर आयोजित परिसंवाद में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। 21 फरवरी को हबीब तनवीर सभागार में सम्पन्न समारोह में आवासीय लेखक मदन सोनी, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र मंचासीन थे।

यूनेस्को द्वारा पूरे विश्व में मातृभाषा दिवस मातृभाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस मनाने का आहवान किया है। इसको ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा देश के सभी विश्वविद्यालयों में मातृभाषा दिवस आयोजन सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को इस संबंध में निर्देश दिए गए।

इसी कड़ी में विश्वविद्यालय में मातृभाषा दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कुलपति ने कहा कि भाषाएं नई संभावनाएं प्रदान करती है। हमें भाषाओं के कई पहलुओं का उपयोग अपने कार्य-व्यवहार में करना चाहिए। उन्होंने भाषाओं को बचाने के लिए तुलसी और कबीर की रचनाओं को सुरक्षित कर भाषाओं को बचाने की आवश्यकता पर बल दिया। आवासीय लेखक मदन सोनी ने कहा कि प्रेमचंद और निराला जैसे महान लेखकों ने हिंदी में लिखा परंतु उनकी मातृभाषाएं अलग-अलग थी।

उन्होंने कहा कि आत्मिक अनुभूति से व्यक्त होने वाली भाषा ही मातृभाषा हो सकती है। उन्होंने माना कि वैश्विकरण ने भाषाओं के सामने अपने अस्तित्व की चुनौती खड़ी कर दी है। मातृभाषाएं खतरे में है और उन्हें बचाने के लिए हमें मातृभाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए। प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि मातृभाषाओं को जीवित रखने के लिए अपने दैनिक जीवन में मातृभाषा का प्रयोग जरूरी है। उन्होंने आहवान किया कि आत्मविश्वास और स्वाभीमान को जगाकर ही मातृभाषाएं बचाई जा सकती हैं। कार्यक्रम में भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि मातृभाषा को राष्ट्रभाषा के साथ रिश्ता लुप्त हो रहा है। भाषाओं को बचाने के लिए हमें काम करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन भाषा विद्यापीठ में सहायक प्रोफेसर तथा परिसंवाद के संयोजक डॉ. अनिल कुमार दुबे ने किया।

इस अवसर पर साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह, सहायक प्रोफेसर डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. हरीश हुनगुंद, डॉ. धनजी प्रसाद, जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे भाषा विद्यापीठ के छात्र पंकज कुमार मिश्र, सचिन पाहवा ने अपनी-अपनी मातृभाषाओं, भोजपुरी, तमिल, हिंदी, पंजाबी, कन्नड़ और मराठी आदि में अपने मंतव्य दिए। समारोह में अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।